ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

# गांधी का मेनिफेस्टो : 'हिन्द स्वराज'

**[1]डॉ0 राजेश चन्द्र मिश्र**

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य, हीरालाल रामनिवास स्ना0 महाविद्यालय, खलीलाबाद, संत कबीर नगर

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

## Abstract

सन् 1909 में दक्षिण अफ्रीका के अपने आन्दोलन के सिलसिले में महात्मा गांधी को एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ इंग्लैण्ड जाना पड़ा। जहाँ वह 10 जुलाई से 13 नवम्बर तक रहे। 13 नवम्बर, 1909 को महात्मा गांधी 'एस0एस0 किल्डोनन केसल' जहाज द्वारा इंग्लैण्ड से दक्षिण अफ्रीका के लिए प्रस्थान किये। दिनांक 13 नवम्बर, 1909 से 22 वम्बर, 1909 के बीच मात्र 10 दिनों में समुद्र के मध्य 'हिन्द स्वराज' लिखा। दाहिने हाथ के थक जाने पर उन्होंने बाएँ हाथ से लिखा। 'हिन्द स्वराज' लिखते समय महात्मा गांधी की उम्र 40 वर्ष थी।

**शब्द पूंजीः**– गांधी का मेनिफेस्टो, हिन्द स्वराज, वैश्विक मनुष्यता, सांस्कृतिक आत्मविश्वास।

## Introduction

दक्षिण अफ्रीका पहुँचने पर 'हिन्द स्वराज' को दिसम्बर में अपने समाचार पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' के दो अंकों में छापा। 'इण्डियन ओपिनियन' के पाठकों को 'हिन्द स्वराज' बहुत पसन्द आया, इसलिए तुरन्त जनवरी 1910 में मूल किताब गुजराती भाषा में प्रकाशित किया। इसकी प्रतियाँ हिन्दुस्तान में भी भेजी, जिसे मुम्बई सरकार ने मार्च में जब्त कर लिया। यह समाचार मिलते ही गांधी ने इसका अंग्रेजी भाषान्तर 20 मार्च, 1910 को प्रकाशित कर दिया। 'हिन्द स्वराज' के विचार शीघ्रातिशीघ्र सर्वत्र फैल जाये, इसके लिए गांधी जी अत्यन्त उत्सुक थे। 'हिन्द स्वराज' एक ऐसी पुस्तक है, जिसने उस समय के बड़े और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी भ्रमित कर दिया था। महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले को यह पुस्तक अनगढ़ तो लगी ही, उसमें विचार इतनी उतावली में लिखे गये लगे। उन्होंने तो उसका भविष्य भी बता दिया कि ''गांधी हिन्द में एक साल रहने के बाद खुद ही इस पुस्तक को नष्ट करेंगे।'' महात्मा गांधी के राजनीतिक शिष्य पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि मैं उसे अव्यवहारिक मानता हूँ। उसे स्वीकार करने की बात तो दूर, कांग्रेस ने तो इस किताब पर चर्चा करना भी उचित नहीं माना है। टालस्टाय ने इस पुस्तक को बहुत मूल्यवान माना। जब जरा महात्मा गांधी का स्वयं का विचार 'हिन्द स्वराज' पर क्या था, उसको देखा जाय। सन् 1914 में 'हिन्द स्वराज' (गुजराती) की दूसरी आवृत्ति की प्रस्तावना में गांधी जी ने लिखा– ''ये विचार प्रकट हुए लगभग पाँच वर्ष बीत गये। उस दौरान उसके विचारों के बारे में मेरे साथ बहुत व्यक्तियों ने चर्चायें कीं। अंग्रेज तथा हिन्दी गृहस्थों ने पत्र व्यवहार भी किया। बहुतों ने मतभेद भी प्रकट किया, तो भी मैंने जो विचार प्रदर्शित किये हैं, वे परिणामतः अधिक मजबूत हुए हैं।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

मुझे अगर समय मिले तो मैं उन विचारों को तर्क, दलीलों के साथ ज्यादा विस्तार से रख सकूँगा। उनमें परिवर्तन करना मुझे उचित ही नहीं लगता है।''

सन् 1921 में इस पुस्तक की हिन्दी अनुवाद की प्रस्तावना में गांधी जी ने लिखा, ''12 साल के अनुभव के बाद भी मेरे विचार जैसे थे वैसे ही रहे हैं।'' इसी वर्ष 'यंग इण्डिया' अंग्रेजी साप्ताहिक में हिन्द स्वराज के बारे में पुनः उन्होंने लिखा, ''यह पुस्तक 1909 में लिखी गयी थी। मेरी जो प्रतीति उसमें प्रकट हुई, यह आज पहले से अधिक दृढ़ हुई है।'' सन् 1938 में अंग्रेजी मासिक 'आर्यन पाथ' के ''हिन्द स्वराज विशेषांक'' में गांधी जी ने अपने संदेश में कहा, ''यह पुस्तक मुझे आज फिर से लिखना हो तो मैं कहीं–कहीं उसकी भाषा बदलूं, परन्तु उसको लिखने के बाद इस तीस वर्षों में मैं जो अनेक तूफानों में से पार हुआ हूँ, उनमें मुझे उस पुस्तक में प्रदर्शित विचारों में परिवर्तन करने का कोई कारण मिलता नहीं है।''

सन् 1945 में पण्डित जवाहरलाल नेहरू से इस पुस्तक को लेकर पत्र व्यवहार हुआ। तब भी गांधी जी ने पण्डित नेहरू को लिखा, ''सन् 1909 में 'हिन्द स्वराज' में मैंने जो लिखा, उसकी सत्यता की पुष्टि मेरे अनुभवों से हुई है। उसमें विश्वास रखने वाला केवल मैं एकमात्र भी रह जाऊँ तो भी मुझे उसका अफसोस नहीं होगा। सत्य को मैं जिस तरह देखता हूँ, वह मेरे लिए उसका प्रमाण है। समस्त दुनिया उससे विपरीत दिशा में जा रही है, ऐसा लगता है। मुझे उसका भय नहीं है, क्योंकि पतिंगे अपना अन्त नजदीक आने पर दीये के चारों ओर अधिक से अधिक चक्कर लगाकर घूमने लगता है। सम्भव है, पतींगे जैसी इस दशा में से भारत को हम बचा न सकें तो भी भारत और उसके मार्फत समग्र विश्व को इस नियति में से बचाने के अन्तिम दम तक कोशिश करते रहना, मेरा धर्म है।'' इस प्रकार हम देखते हैं कि 'हिन्द स्वराज' के विचारों के विषय में गांधी जी ने अन्त तक कोई परिवर्तन नहीं किया, क्योंकि उन्हें निरन्तर यह लग रहा था कि इस पुस्तक में उन्होंने एक वैकल्पिक सभ्यता–दृष्टि दी है। यह सभ्यता दृष्टि आधुनिक औद्योगिक सभ्यता के ताप से वैश्विक मनुष्यता को बचाने के उपक्रम के रूप में देखा जाना चाहिए। इसलिए गांधी और गांधी के जीवन–कार्य को सही ढंग से समझने के लिए 'हिन्द स्वराज' कुंजी जैसी पुस्तक है।

लेकिन गांधी जी और उनके राजनैतिक सहयोगियों के मध्य 'हिन्द स्वराज' के विषय में कितनी अधिक दूरी थी, उसका पता 1945 में नेहरू द्वारा गांधी जी को लिखे इस पत्र से स्पष्ट होता है, ''हिन्द स्वराज पढ़ा था, उसको बहुत साल बीत गये और अब केवल उसका धुँधला–सा चित्र मेरे दिमाग में है। ..... मैं उसे तब भी अवास्तविक मानता था और आज भी मानता हूँ। ..... आप जानते हैं कि कांग्रेस ने उस विचार का चर्चा–बहस करने के योग्य भी नहीं माना है। उसे स्वीकार करने की बात तो दूर है।'' शायद इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर आजादी के दो दिन बाद 17 अगस्त, 1947 को 'हरिजन' साप्ताहिक पत्र में गांधी जी ने एक लेख लिखा। लेख का शीर्षक था 'जिन्दा दफनाया ?'' उसमें गांधी जी ने कहा, ''अभी मुझे जिन्दा दफनाया नहीं हैं उस आशा को पकड़ कर रखता हूँ। सामान्य जनता ने मेरे आदर्शों में से श्रद्धा नहीं गँवाई है, उस मान्यता के आधार पर

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

मैं यह आशा रख रहा हूँ। उन्होंने वह श्रद्धा गँवा दी है, ऐसा साबित होगा, तब वह भारी संकट में आ जायेगी और तब मुझे जिन्दा दफनाया गया है, ऐसा कहा जाएगा। परन्तु मेरी श्रद्धा की ज्योति जब तक जैसी की तैसी चमकती रहेगी– मुझे आशा है कि मैं अकेला रह जाऊँ तो भी वह चमकती ही रहेगी– तब तक कब्र में पड़े हुए भी मैं जिन्दा रहूँगा और विशेष तो यह कि मैं बोलता भी रहूँगा। मैं मरने के बाद भी अपनी श्रद्धा की घोषणा करता रहूँगा और कब्र में से भी अपनी बात सुनाता रहूँगा।'' 'हिन्द स्वराज' के प्रति गांधी जी का विश्वास अटूट एवं अविचल रहा। इसका प्रमाण उनकी हत्या के एक दिन पहले लिखे उनके लेख से स्पष्ट है : ''हिन्द ने राजकीय स्वतन्त्रता प्राप्त की ..... शहर और बड़े गाँवों से भिन्न उसके सात लाख गाँवों में हिन्द की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता लाना अभी बाकी है।''

तिब्बत की निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री सामदोंग रिनपोछे ने 'हिन्द स्वराज' की तुलना 'बौद्ध त्रिपिटक से की है। हमें इसके कारणों पर विचार करना होगा। सन् 2006 में सेवाग्राम की बापूकुटी के सामने शाम को प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा कि, ''आज से तीन साल बाद 'हिन्द स्वराज' ग्रन्थ की शताब्दी आ रही है। वह त्रिपिटक के बाद लिखा गया सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, ऐसा मैं मानता हूँ। ग्राम स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक यह शताब्दी मनायी जानी चाहिए। आप सभी तैयारियाँ कीजिए। बौद्ध त्रिपिटक में जो धर्म व्यक्ति को सम्बोधित करके सिखाया गया है, वह 'हिन्द स्वराज' सारे समाज को, सारी दुनिया को सिखाता है।'' 'हिन्द स्वराज' के सन्दर्भ में महादेव देसाई के पुत्र नारायण देसाई का वक्तव्य जिसको उन्होंने कान्तिशाह की पुस्तक 'हिन्द स्वराज' एक अध्ययन (गांधी को पाने का प्रयास) के प्रस्तावना में 29.12.2006 को दिया है, ''देशकाल की सीमा को लॉघने वाले दो प्रकार के ग्रन्थ होते हैं– एक तो आत्मा की गहराई में डुबकी लगाने वाले तथा दूसरे समाज–जीवन के अनेक क्षेत्रों के सागर में तैरने वाले। गीता पहले प्रकार का ग्रन्थ है, जो उसकी गहराई के कारण हजारों वर्षों के बाद आज भी साधक को जीवन जीने की वैसी ही प्रेरणा देता रहता है, कार्ल मार्क्स का 'दास कैपिटल' दूसरे प्रकार का ग्रन्थ है, जो दुनिया के सभी खण्डों में क्रान्तिकारियों को आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्रों के बारे में चिन्तन और आचरण करने की प्रेरणा देता है। गांधी की 'हिन्द स्वराज' इन दोनों ग्रन्थों के लक्षणों को एक साथ दर्शाने वाली कृति है। गीता की तरह संवाद शैली में लिखी गयी, गीता की तरह ही आकार में छोटी इस पुस्तिका ने 'दास कैपिटल' की तरह जीवन के अनेक क्षेत्र क्षेत्रों को समेट लिया है और उसी की तरह आँखें खोल दे, वैसा पृथक्करण भी उसमें है। गहराई से जाँच करने वाले को उसमें सागर जैसा गाम्भीर्य और हिमालय जैसा स्थैर्य मिलेगा। गीता सब उपनिषदों के दोहन में से प्रकट हुई है, 'कैपिटल'' वर्षों के विशाल अध्ययन, चिन्तन, मनन में से निष्पन्न ग्रन्थ है। दोनों ग्रन्थ युगान्त में रचे गये हैं और नये युग को बधाई देते हैं। युग परिवर्तनकारी ग्रन्थ या तो संस्कृति के निचोड़ या इतिहास के पृथक्करण में से लिखे जाते हैं। 'हिन्द स्वराज' भारत की संस्कृति का सार निकालकर आधुनिक युग का पृथक्करण करके उत्तर आधुनिक युग की ओर जाने का इशारा करने वाली पुस्तक है। सारी आधुनिक संस्कृति का विश्लेषण करने के बाद वह उसे चुनौती देती है तथा उसके विकल्प के रूप में प्राचीन मूल में से उगने वाली, परन्तु नव संस्करण प्राप्त करती 'उत्तर आधुनिक' संस्कृति का सपना प्रस्तुत करती है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

गांधी का प्रयास हिंसा परम्परा या विकृति को चुनौती देकर अहिंसक संस्कृति का आह्वान करने का है।'' 'हिन्द स्वराज' की सभ्यता दृष्टि नामक लेखक में रमेश चन्द्र शाह ने गांधी जी की 'हिन्द स्वराज' और श्री अरविन्द की 'फाउण्डेशन आफ इण्डियन कल्चर' की तुलना करते हुए कहा है कि ''गांधी जी का 'हिन्द स्वराज' और श्री अरविन्द का 'फाउण्डेशन आफ इण्डियन कल्चर' लगभग आस–पास की ही इस शताब्दी के आरम्भिक दशकों की ही रचनायें हैं। दोनों में एक चीज उभयनिष्ठ है और वह कि दोनों में व्याप्त सांस्कृतिक आत्मविश्वास का स्वर। इस सांस्कृतिक आत्मविश्वास की पीठिका पर ही दोनों के भीतर से वह अन्तर्वस्तु आकर ग्रहण करती है, जिसे हम सभ्यता–समीक्षा कह सकते हैं। एक आक्रान्त सभ्यता द्वारा आक्रामक सभ्यता को दिया गया ऐसा प्रत्युत्तर, जो उस आक्रामक सभ्यता के दिग्विजयी अहंकार को उिसकी ऐतिहातिक यात्रा में ही नहीं, प्रत्युत उसके मूलाधार में चुनौती देना प्रतीत होता है। लगता है, जैसे एक समूची राष्ट्रीय अस्मिता अपने अपमान और दलन की पराकाष्ठा के बिन्दु पर ही सहसा उठकर खड़ी हो गयी है और सम्भवतः अपने सुदीर्घ इतिहास में पहली बार इस तरह स्वचेतन होकर अपने को और दूसरे को पहचानने और परिभाषित करने का उपक्रम कर रही है।''

हिन्द स्वराज : पाठ चर्चा– हिन्द स्वराज की प्रस्तावना में गांधी जी ने दो महत्त्वपूर्ण बात की है। प्रथम उन्हीं के शब्दों में, ''यह साबित करने की जरूरत नहीं कि जो विचार मैं पाठकों के सामने रखता हूँ, वे हिन्दुस्तान में जिन पर (पश्चिमी) सभ्यता की धुन सवार नहीं हुई है, ऐसे बहुतेरे हिन्दुस्तानियों के हैं।'' दूसरी बात उन्हीं के शब्दों में, ''उद्देश्य सिर्फ देश की सेवा करने का और सत्य की खोज करने का और उसके मुताविक बरतने का है। इसलिए अगर मेरे विचार गलत साबित हों, तो उन्हें कपड़ रखने का मेरा आग्रह नहीं है। अगर वे सच साबित हों तो दूसरे लोग भी उनके मुताबिक बरतें, ऐसी देश के भले के लिए साधारण तौर पर मेरी भावना रहेगी।''

टिप्पणी : इस प्रकार अपनी प्रस्तावना में गांधी जी यह घोषणा करते हैं कि पश्चिमी सभ्यता (पूँजीवादी व्यवस्था) से भारत का विकास नहीं होगा तथा उनके पास इस देश के विकास के लिए एक माडल है।

हिन्द स्वराज : लेखक परिचय– हिन्द स्वराज पुस्तक के लेखक का नाम : मोहन दास करमचन्द गांधी, जन्म : 2 अक्टूबर, 1869, स्थान : पोरबन्दर, कठियावाड़, पिता : करमचन्द गांधी जो क्रमशः पोरबन्दर, राजकोट, बांकानेर राज्य के दीवान रहे, माता : पुतली बाई (जो कि करमचन्द गांधी की चौथी पत्नी थीं), जाति : वैश्य, भाई : तीन (सबसे छोटे भाई मोहन दास), बहन : तीन, पुत्र : चार (हरिलाल 1888), मणि लाल (1892), रामदास (1897), देवदास (1900), पत्नी : कस्तूरबा गांधी (शादी 1883), शिक्षा : मैट्रिक (भारत), एल0एल0बी0 (लंदन), व्यवसाय : विधिक सेवा (1892 से भारत और दक्षिणी अफ्रीका में)।

राजनीतिक संघर्ष– मई–जून 1893 में अनेक प्रकार के रंगभेद (दक्षिण अफ्रीका) के कारण 22 अगस्त, 1894 को नेटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना, सन् 1895 से दक्षिण अफ्रीका भारतीयों की समस्या को

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

लेकर 'द' इण्डियन फ्रैन्चाइज : एन अपील टू एवरी विट्रन इन साउथ अफ्रीका जारी की, सन् 1896 में भारत में दक्षिण अफ्रीका की समस्याओं को लेकर 'द ग्रीन पैम्पलेट' प्रकाशित कर उसके प्रचार में मुम्बई, मद्रास, पूना और कलकत्ता का दौरा किया, 1987–98 में दक्षिण अफ्रीका में विभेदक कानूनों के सम्बन्ध में स्थानीय एवं साम्राज्यिक अधिकारियों को याचिका देते रहने के साथ–साथ भारतीय सार्वजनिक व्यक्तियों एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ सम्पर्क में रहे। सन् 1899 में बोअर युद्ध में भारतीय एम्बुलेन्स कोर की स्थापना, युद्ध पदक से सम्मानित, सन् 1900 में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के समस्या पर दादा भाई नौरोजी के संकल्प के प्रारूप को कांग्रेस अधिवेशन में भेजा। सन् 1901 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में दक्षिण अफ्रीका की समस्याओं पर प्रस्ताव रखा, सन् 1902 में एशिया विरोधी कानून के विरूद्ध भारतीयों के मामले का दक्षिण अफ्रीका में नेतृत्व किया, सन् 1903 ट्रांसवाल ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन की स्थापना, सन् 1905 में ब्रिटिश उच्च आयुक्त लार्ड सेलबोर्न को ट्रांसवाल के भारतीयों की समस्याओं से अवगत कराने के लिए प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया, बंगाल विभागन का विरोध किया, विलायती वस्तुओं के बहिष्कार का समर्थन किया, सन् 1906 में 'न्याय के नाम पर और मानवता के भलाई के वास्ते' भारत के लिए 'होम रूल' का समर्थन, सन् 1907 में ट्रांसवाल एशियाई कानून संशोधन अध्यादेश के विरूद्ध निष्क्रिय प्रतिरोध, ब्लैक एक्ट का विरोध, सन् 1908 में निष्क्रिय प्रतिरोध के स्थान पर सत्याग्रह शब्द अपनाया, संशोधित पंजीकरण अधिनियम को सम्राट की स्वीकृति प्राप्त होने पर विरोध किया, जिसके फलस्वरूप दो माह की कठोर कारावास, सन् 1909 में पंजीकरण प्रमाण पत्र न दिखा पाने के लिए फोक्सरूस्ट में गिरफ्तार हुए, देश निकाला दिया गया, वापस आ गये, फिर से गिरफ्तार कर लिया गया, परन्तु जमानत पर छोड़ दिये गये, समाचार पत्रों में लेख लिखकर भारतीयों से अन्तिम संघर्ष के लिए तैयार होने का आह्वान, फोक्सरूस्ट में गिरफ्तार, तीन महीने की सजा, भारतीयों का मामला प्रस्तुत करने के लिए हाजी हबीब के साथ प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैण्ड रवाना, लार्ड एम्पथिल की सहायता से प्रभावशाली ब्रिटिश नेताओं और जन समुदाय को भारत के मामले की सही जानकारी तथा साम्राज्यिक अधिकारियों के सामने अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए निरन्तर कार्य किया।

पत्रकारिता– सन् 1904 में दक्षिण अफ्रीका में 'इण्डियन ओपिनियन' साप्ताहिक समाचार पत्र चार भाषाओं में हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, तमिल में प्रकाशन।

धार्मिक ज्ञान एवं व्यवहार– सभी धर्मों के अध्ययन एवं मनन के दौरान क्रमशः सन् 1896 एवं 1901 के सार्वजनिक कार्यों में मिले उपहारों जिसमें सोना, चाँदी, हीरे आदि थे, को बैंक में जमा कर सन् 1901 में दक्षिण अफ्रीका में ट्रस्ट की स्थापना। सन् 1904 में डरबन (नेटाल) दक्षिण अफ्रीका में फिनिक्स आश्रम की स्थापना, सन् 1906 में ब्रह्मचर्य पालन का संकल्प, अपनी सभी पैतृक सम्पत्ति भाईयों को दान। यहाँ महात्मा गांधी जी का परिचय सन् 1909 तक का ही दिया गया है, क्योंकि इस पुस्तक की रचना 1909 में की गयी थी।

सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थों की सूची :

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

1. हिन्द स्वराज : गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।
2. सत्य के प्रयोग (आत्मकथा) : गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।
3. ग्राम–स्वराज्य : गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।
4. हिन्द स्वराज : एक अध्ययन (गांधी को पाने का प्रयास) लेखक कान्ति शाह, सर्व सेवा संघ–प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
5. हिन्द स्वराज : गांधी का शब्द अवतार, गिरिराज किशोर, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. महात्मा गांधी : सहस्त्राब्द का महानायक, सम्पादन : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. गीता माता : गांधी जी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. गाँव आन्दोलन क्यों ? जो0कॉ0 कुमारप्पा, अखिल भारतीय सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी।
9. महावीर प्रसाद द्विवेदी : ''प्रतिनिधि संकलन'', प्रधान सम्पादक : नामवर सिंह, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।
10. गांधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्यायें, डॉ0 रामविलास शर्मा, वाणी प्रकशन, नई दिल्ली।
11. महात्मा गांधी के विचार, आर0के0 प्रभु, यू0आर0 राव, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।
12. गांधी : समय, समाज और संस्कृति–विष्णु प्रभाकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. महामानव महात्मा गांधी–आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, भारतीय प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली।
14. विनाश को निमन्त्रण : भारत की नई अर्थनीति, सम्पादन– राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. आधी रात को आजादी : लैटी कालिन्स एवं दॉमिनिक लैपियर, अनु प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
16. मार्क्स गांधी और समसामयिक सन्दर्भ : गणेश मंत्री, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
17. गांधी के ग्राम स्वराज्य सिद्धान्त की प्रत्यवेक्षा, सम्पादन : रामशंकर त्रिपाठी एवं विजय शंकर चौबे, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी।
18. महात्मा गांधी का दर्शन : डॉ0 धीरेन्द्र मोहन दत्त, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना–3।
19. सभ्यता का विकल्प : गांधी–दृष्टि का पुनराविष्कार – नन्द किशोर आचार्य, बाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, राजस्थान।